❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यवयास्मद् द्वेषो यवयाराती:।।

यजुर्वेद 5/25

हे प्रभो! हमसे द्वेष के भावों और कृपणता को दूर करो।

O God ! Drive away hatred and thankless-ness from our lives.

वर्ष 40, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 जून, 2017 से रविवार 11 जून, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर विभिन्न आर्यसमाजों द्वारा

विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का आयोजन

यज्ञ पर हुए वैज्ञानिक शोध के परिणामों से कराया गया हजारों लोगों को अवगत

प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखकर ही आने वाली पीढ़ियों को सुखद एवं सुरक्षित भविष्य दे सकते हैं

– सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

घर-घर यज्ञ होंगे तो पर्यावरण शुद्ध रहेगा और बीमारियों के विषाणुओं से बचा जा सकेगा

– महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा

3-4 एवं 5 जून को दिल्ली में विभिन्न सड़कों, चौक-बाजारों, पार्कों, घरों, विद्यालयों, सोसायटियों में हुए शुद्धि यज्ञ

पर्यावरण को बचाने में वैदिक यज्ञ विज्ञान अत्यधिक महत्वपूर्ण : जागरुकता के लिए यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों की महती आवश्यकता – धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

स्टाल लगाकर जन साधारण में बांटे पर्यावरण शुद्धि यज्ञ पत्रक : यज्ञ के वैज्ञानिक परिणामों से आई नई जागृति

पर्यावरण दिवस के अवसर पर आर्यसमाजों ने अपने भवनों की परिधि से बाहर निकलकर 3 दिनों तक सार्वजनिक पार्कों में कराए शुद्धि यज्ञ । 40 से अधिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ कराने के लिए आर्यसमाज कृष्ण नगर के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों का विशेष धन्यवाद।

– शेष चित्रमय झांकी पृष्ठ 5 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में अनेक सार्वजनिक स्थलों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया। दिल्ली की अधिकांश आर्य समाजों ने अपने-अपने भवनों से बाहर निकलकर प्रर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ, प्रवचन एवं भजनसंध्या का आयोजन किया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने दिल्ली की सभी आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं एवं सहयोगी प्रतिष्ठानों का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि यदि 'इसी प्रकार सभी आर्यजन एक जुट होकर नियमित पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करते रहें तो वह दिन दूर नहीं जब विश्व के वातावरण में प्राण वायु का भरपूर मात्रा में संचार होगा।'

सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों, सहयोगी संस्थाओं एवं यज्ञ संयोजकों का धन्यवाद किया जिन्होंने यज्ञ व्यवस्थाओं के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी इसके प्रचार-प्रसार में अपना भरपूर सहयोग दिया। सभा के इस महाकार्य में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं एम.डी.एच की ओर से पर्यावरण शुद्धि यज्ञ के बैनर एवं पत्रक उपलब्ध करवाए गए।

सारथी चैनल पर प्रसारित हुई एक घंटे की विशेष परिचर्चा – पर्यावरण पर यज्ञ के प्रभाव

"यह धुआं जरुरी है"

देखने हेतु लॉगऑन करें https://www.youtube.com/watch?v=e7Jl7bcFLg4

दिल्ली सभा के अन्तर्गत क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

25 जून, 2, 9, 16, 25 जुलाई, 2017

विस्तृत जानकारी पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

अजेय प्राण

वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवाः अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि।। -ऋ. 8/96/7
ऋषिः **तिरश्चीर्द्युतानो वा मारुतः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **इन्द्र** = हे आत्मन्! **विश्वे देवाः** = सब देव, सब दिव्यभाव **ये सखायः** = जो तेरे साथी बनते हैं **वृत्रस्य श्वसथात्** = पापासुर के सांस से, फुंकार से, बल-प्रदर्शन से **ईषमाणाः**= डरकर भागते हुए **त्वा** = तुझे **अजहुः** = छोड़ देते हैं। हे इन्द्र! **ते सख्यम्** = तेरी मैत्री, तेरा साथ **मरुद्भिः** = प्राणों के साथ **अस्तु** = यदि होता है या हो अथ = तो तू **इमाः विश्वाः पृतनाः** = पाप की इस सब बड़ी फौज को **जयासि** = जीत लेता है।

विनय - हे मेरे आत्मा! तेरे असली साथी तो प्राण ही हैं। जबतक प्राण तेरे साथी नहीं हो जाते तबतक अन्य देवों का साथ बेकार है, प्रत्युत समय पर धोखा देने वाला है। मैं जब उत्तम ग्रन्थ पढ़ता हूं, सन्तों की वाणी सुनता हूं, पवित्र उपदेश श्रवण करता हूं तब मन में बड़े दिव्य, उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं; आन्तरिक मनन और भावना से मन की अवस्था ऐसी ऊंची हो जाती है कि हृदय में मानो देवसमाज लग जाता है। मैं अपने को बिल्कुल निर्विकार, निष्काम और पवित्र समझने लगता हूं, परन्तु पाप-प्रलोभन के आते ही यह सब-का-सब उलट जाता है, वृत्रासुर के सम्मुख आने पर इस सब देव-समाज में भगी पड़ जाती है,उसकी फुंकार से सब दिव्य विचार क्षण में उड़ जाते है, जरा सी देर में हृदय में महाबली वृत्रासुर का राज्य जम जाता है। उस समय यह जानता हुआ भी कि मैं बुरा कर रहा हूं, पाप कर रहा हूं, पाप की ही ओर खिंचा चला जाता हूं। मनुष्य इस अवस्था से कैसे पार हो? इसका एक ही उपाय है कि मनुष्य प्राणों की समता प्राप्त करे। प्राणों का सम होना ही प्राणों की (मरुतों की) आत्मा के साथ मैत्री होना है। आत्मा के साथ जुडने पर, आत्मा के समीप होने पर प्राण सम और शान्त हो जाते हैं।ये सम हुए प्राण कार्य करने के बड़े प्रबल साधन बन जाते हैं। प्राण की सम अवस्था में जो विचार होते हैं, वे स्थिर ओर दृढ़ होते हैं; इस अवस्था में किये गये संकल्प बड़ा विस्तृत प्रभाव रखते हैं। आत्मशक्ति जब प्राणों को आत्मगृहीत करके उन द्वारा प्रकट होती है तो उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता, सब वासनाएं दब जाती हैं, कोई भी पाप-विचार सिर ऊपर नहीं उठा सकता। बड़े-बड़े प्रलोभन,पाप की बड़ी-बड़ी फौजें आत्मा के एक संकल्प के द्वारा दब जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं; आत्माग्नि की एक लपट में भस्म हो जाती हैं, जब वह आत्म-संकल्प सम हुए,सखा बने हुए प्राणों द्वारा प्रकट होता है और जब आत्माग्नि प्राणमाध्यम द्वारा सहस्र-ग्रणित होकर जल उठती है। प्राणों की इस मैत्री को, दोस्ती को पाकर आत्मा क्या नहीं कर सकता? प्राण महाबली है। वह जबतक असम रहता हे तब तक उसका बल वृत्रासुर के काम आता है, परन्तु जब वह सम हो जाता है तो वह आत्मा का हो जाता है। आत्मा का सखा प्राण अजेय है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

गाय के प्रभावशाली अतीत के खिलाफ साजिश

गाय के नाम पर धर्म या धर्मनिरपेक्षता में से कुछ बचे या न बचे, मूर्खता बची रहना पक्का है। भारत सरकार ने पशुओं के प्रति क्रूरता का निवारण अधिनियम की एक धारा में बदलाव किया है। जिसमें जिन मवेशियों की मवेशी बाजार से खरीद होती है उनको मारा नहीं जा सकता है। इस नियम का दक्षिण भारत के कई इलाकों में विरोध कर बीफ पार्टियां तक आयोजित की गईं। लोगों ने सरकार से यह पूछा कि अब हम क्या खाएं? खाने-पीने की स्वतंत्रता की मांग करना एक अलग बात है लेकिन कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं द्वारा केरल में केंद्र सरकार के फैसले के विरोध में सरेआम एक गाय को काटकर अपना विरोध जताना बहुत ही भद्दी और असंवेदनशील गिरी हुई हरकत है। पशुओं के अधिकारों पर बात करने वाले लोग बैलों के लिए जल्लीकट्टू को बर्बर बता रहे थे वह लोग आज केरल में हुई इस घटना पर बिल्कुल चुप हैं।

गाय भारत का पशु ही नहीं बल्कि इसे आस्था की नजर देखें तो माता का दर्जा तक प्राप्त है लेकिन दु:खद बात यह कि भारतीय राजनेता आज इसी माता पर अपनी राजनीति कर इसे सरेआम कत्ल कर रहे हैं। एक प्रभावशाली अतीत को समेटे इस वर्तमान भारत में जो चल रहा है वह काफी दु:खद है। आज वर्तमान भारत में राजनेता अपने राजनैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। जिसका परिणाम ये प्राप्त हुआ कि हमारे प्राण-हमारे आदर्श महापुरुष और माँ तुल्य गाय उन दो कौड़ी के विदेशी लुटेरों के लिए गन्दी राजनीति का हिस्सा बनकर रह गये।

हम मानते हैं सरकार और विपक्ष की बहुत सारे मुद्दों पर आम राय नहीं होती। विरोध करना विपक्ष द्वारा राजनीति का एक हिस्सा होता है। सरकार से सवाल और आलोचना सरकार को सही राह दिखाती है। लेकिन सरकार के फैसले का विरोध जिस तरीके से केरल में किया गया यह भारतीय राजनीति का एक अशोभनीय चेहरा कहा जा सकता है। क्या आज विपक्ष यह समझ बैठा कि गाय के प्रति आस्था सिर्फ सत्ताधारी दल की बपौती है? नहीं....! गाय माता देश के लिए यहाँ के सांस्कृतिक धार्मिक मूल्यों के लिए उतनी ही कीमती और आस्थावान है जितना अन्य राष्ट्रीय मूल्य। आखिर क्यों आज सत्ता के लिए गाय को निवाला बनाया जा रहा है?

जब से बीफ पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग उठ रही है तभी से दक्षिण भारत में छात्रों का एक बड़ा समूह ऐसा भी है जो इसका विरोध करता आ रहा है। हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में कई बार विरोध स्वरुप बीफ के फेस्टिवल का आयोजन किया है। जब इस फेस्टिवल को ज्यादा तरजीह नहीं दी गयी तब अचानक राजनीति बदलते हुए खान-पान की मांग को आगे करते हुए अलग देश द्रविड़नाडु की मांग होने लगी। पहले यह मांग सिर्फ तमिलभाषी क्षेत्रों के लिए थी। लेकिन बाद में द्रविड़नाडु में आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, ओडिशा और तमिलनाडु को भी शामिल करने की बात कही गई। यानी मांग यह थी कि दक्षिण भारत के राज्यों को मिलाकर एक नया मुल्क बनाया जाए, द्रविड़नाडु।

ऐसा सिर्फ भारत में ही नहीं हुआ। इससे पहले क्यूबा के तत्कालीन राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो ने भी इसी तरह का कानून लागू किया था और गौवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया था और किसी भी विरोधी पार्टी ने इस पर सवाल नहीं उठाया था। लेकिन भारत में देखा जाये तो इसका उल्टा काम हो रहा है। राजनीति में तर्क का तर्क से और विचारधारा का विचारधारा से मुकाबला होते देखा था लेकिन पहली बार लोग नाजायज और क्रूर मांग लेकर आगे बढ़ते रहे कोई इंसानों की हत्या कर गाय को बचाने की बात कर रहा है तो कोई गाय की हत्या कर अपना विरोध जता रहा है। सामाजिक चेतना, जीवों के प्रति दया, सहिष्णुता, उदारता आज कहीं दिखाई नहीं दे रही है। क्या ऐसा नहीं हो सकता गौवध बिना प्रतिबन्ध और तथाकथित गौरक्षा के हिंसक टोले की बजाय सिर्फ हमारे पुराने धार्मिक-सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना से बच जाये?

केरल में युवा कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं ने 28 मई को विरोध स्वरूप जिस कार्य को अंजाम दिया वह नैतिकता की दृष्टि से अस्वीकार्य है। दरअसल, इस फैसले के जरिए सरकार जिस तरह के राजनीतिक फायदे की अपेक्षा कर रही होगी, युवा कांग्रेस के इस कृत्य से उसे उद्देश्यपूर्ति में लाभ ही मिलेगा। कुल मिलाकर समाज दो भागों में बंटता दिख रहा है। एक तरफ संवैधानिक अधिकारों और व्यापारिक हितों का हवाला देकर आदेश का विरोध कर रहे लोग और दूसरी तरफ गौ प्रेम में मनुष्यों की हत्या से भी बाज न आने वाले गौभक्त।

देखा जाए तो गायों को मां कहा जाता है लेकिन उसकी देखभाल मां की तरह नहीं की जाती। गायों को बचाने के लिए उन पर ध्यान देना जरूरी है। शेरों के लिए करोड़ों रुपये खर्च करने वाली सरकार गाय के लिए खर्च नहीं करती। शायद इसी वजह से भी गाय की बात सांप्रदायिक हो जाती है।

दिक्कत ये है कि जब इतिहास या धार्मिक पुस्तक पढ़ने की बारी आती है तो राजनैतिक दल उनका मजाक उड़ाते हैं। फिर जब राजनीति करनी होती है तो इतिहास और वेद आदि की अनाप-शनाप व्याख्याएं करने लगते हैं। मौजूदा समय में राष्ट्रवाद का राजनीतिक इस्तेमाल, राष्ट्रवाद की कोई नई समझ पैदा कर रहा है या जो पहले कई बार हो चुका है उसी का बेतुका संस्करण है। यह खतरनाक प्रवृत्ति है, क्या सरकार और समाज ऐसे खतरों से निपटने में सक्षम हैं? क्योंकि अब या तो देश को बांटने का षडयंत्र हो रहा है या फिर गौवंश के प्रभावशाली अतीत के खिलाफ साजिश सी होती दिखाई दे रही है।

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

ये प्रतिरोध है या प्रतिशोध?

....समाज में जातीय शोषण नकारा नहीं जा सकता। दलित समाज समेत अनेक लोग इसका शिकार है सहारनपुर में हुई हिंसा के मामले में भीम आर्मी और दलित समाज के लोगों के खिलाफ जो कार्यवाही हो रही है, उससे वह काफी निराश हैं। मायावती समेत अनेक जातीय राजनीति करने वाले दल इस हिंसा को ''दलित गरिमा'' और ''दलित अस्मिता'' के ऊपर हमले का सवाल बना देना चाहते हैं। मायावती खुद इस घटना को एक बड़े राजनैतिक अभियान में बदल देना चाहती हैं। जिसका इशारा इस ओर है कि राजनैतिक सत्ता के माध्यम से ही दूसरे वर्ग का शोषण किया जाये। पर क्या शोषण ही सत्ता का मुख्य काम रह गया?....

सहारनपुर हिंसा की घटना मीडिया के कैमरों और राजनेताओं के बयान से खूब परवान चढ़ी। अब जहां राज्य सरकार की नज़र में स्थानीय अराजक तत्व दोषी हैं तो वहीं विपक्ष के लिए राज्य सरकार। किन्तु क्या कोई ऐसा भी है जो यह मनाने को तैयार हो कि सहारनपुर जैसी घटना के लिए सिर्फ वह लोग जिम्मेदार हैं जो आज समाज में एक दूसरे के प्रति नफरत बाँट कर अपनी राजनैतिक रोटियां सेंक रहे हैं? दरअसल सामाजिक मोर्चे से शुरू हुई इस लड़ाई में राजनेताओं के बयानों की आहुति ने जो ज्वाला भड़काई वह एकदम समाप्त नहीं होगी। लेकिन हमें आज इसका हल सोचना है क्योंकि यह घटना एक प्रक्रिया भर है; आगे जो होगा वह कहीं और ज्यादा खतरनाक हो सकता है।

मीडिया और सामाजिक विश्लेषकों के नजरिये से इस घटना का खूब विश्लेषण हो चुका है जिसमें कोई प्रसाशन तो कोई भीम सेना समेत अन्य धार्मिक जातिगत संगठनों को दोषी ठहरा रहे हैं हालाँकि इससे इंकार भी नहीं किया जा सकता कि इन सबका इसमें कोई किरदार न रहा हो। किन्तु असल सच यह है कि इसका असली दोषी है वह झूठा साम्यवाद है जो कलम से लेकर भाषणों तक में दलितों को दलित बनाकर रखना चाहते हैं। जो उनकी गरीबी, उनकी सामाजिक स्थिति के लिए सिर्फ और सिर्फ कथित ऊँचे वर्ग को दोषी ठहराकर उनके वोट से लेकर भावनात्मक शोषण तक कर रहे है।

गरीब और शैक्षिक रूप से पिछड़े लोग हर देश, हर शहर, गाँव, मोहल्ले और परिवारों में मिल जायेंगे लेकिन इसका हल क्या यही है कि हिंसा से सब कुछ हासिल किया जाये? प्रतिरोध अवश्य हो लेकिन उसमें प्रतिशोध की भावना न हो। पर सहारनपुर हिंसा में जिस तरह के ओडियो-वीडियो सामने आ रहे हैं उनमें प्रतिरोध के बजाय प्रतिशोध की भावना स्पष्ट दिखाई दे रही है। हो सकता है आज दलित चिन्तक, विचारक लेखक इसी आस में बैठे हों कि यहाँ से हिंसा का कोई बड़ा तांडव होकर गुजरे और वह इन इनकी लाशों पर नया महाभारत लिख सके कि देखों हमने तो पहले ही कहा था कि दलितों को शोषण हो रहा है।

हर बार की तरह दलित समाज के लोगों ने अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए धर्मपरिवर्तन का पुराना रास्ता अपनाया है। दलित समाज के अनेक लोगों द्वारा शासन और प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए देवी-देवताओं के चित्रों और प्रतिमाओं का विसर्जन बड़ी नहर में कर नये धर्म सिद्धांत की तलाश की जा रही है। मुझे नहीं पता इसमें वह कितने सफल होंगे कितने नहीं पर किसी भी सिद्धांत को परखने की कसौटी उसका व्यवहार है। जब-जब ''जय श्री राम'' का नारा लगाया जाता है, कोई न कोई दलित चिंतक शंबूक की कहानी लेकर बैठ जाता है। वही शूद्र शंबूक, जो था तो ऋषि लेकिन उसे अपनी जान राम के आदेश पर गंवाना पड़ी थी, क्योंकि वह जाति से शूद्र था। सामाजिक वर्णक्रम पर आधारित जाति-व्यवस्था और उसकी दीवारों को मजबूत करने की राजनीति भी इन पौराणिक कथाओं के आधार बखूबी हो रही है। इसमें लोग एक बात भूल जाते हैं कि धर्म बदलने से केवल रीति-रिवाजों में परिवर्तन आता है। सामाजिक स्तर पर कोई खास बदलाव नहीं आता है।

समाज में जातीय शोषण नकारा नहीं जा सकता दलित समाज समेत अनेक लोग इसका शिकार है सहारनपुर में हुई हिंसा के मामले में भीम आर्मी और दलित समाज के लोगों के खिलाफ जो कार्यवाही हो रही है, उससे वह काफी निराश हैं। मायावती समेत अनेक जातीय राजनीति करने वाले दल इस हिंसा को ''दलित गरिमा'' और ''दलित अस्मिता'' के ऊपर हमले का सवाल बना देना चाहते हैं। मायावती खुद इस घटना को एक बड़े राजनीतिक अभियान में बदल देना चाहती हैं। जिसका इशारा इस ओर है कि राजनीतिक सत्ता के माध्यम से ही दूसरे वर्ग का शोषण किया जाये। पर क्या शोषण ही सत्ता का मुख्य काम रह गया? क्यों न सरकार और समाज मिलकर कोई ऐसा समाधान निकाले कि जातीय शोषण उत्पीड़न की यह व्यवस्था ही धराशाई हो जाये।

जब आजादी की लहर उठी तो उसमें देश के हर वर्ग का व्यक्ति जूझने लगा था। दलित बहुजन समुदाय गरीब था, शोषित था और पीड़ित था। वह भी मुक्ति चाहता था आर्थिक असमानता से। वह मुक्ति चाहता था सामाजिक विषमता से। वह मुक्ति चाहता था धार्मिक शोषण की जंजीरों से। इसीलिए वह मरे मन से नहीं, अपितु उत्साहित मन से इस स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ा जिसमें बलिदान देने वाले तिलका मांझी, उदईया, मातादीन भंगी, महाबीरी देवी वाल्मीकि, वीरांगना झलकारी बाई, ऊदादेवी पासी, चेतराम जाटव और बल्लू मेहतर समेत अनेक वीर क्रन्तिकारी योद्धा मौजूद थे। परिणाम यह रहा कि अंग्रेज शासन, जन आक्रोश से समक्ष अंतत: हिल उठा। शोषक समझ गया कि जिस देश का गरीब भी जाग गया हो अब अधिक दिन भारत को गुलाम नहीं बनाये रक्खा जा सकता। आखिरकार देश आजाद हो गया। चारों ओर खुशी मनायी गयी लेकिन अंग्रेजी शासन के आकाश से गिरने वाली स्वतंत्रता कहां आकर रुक गयी? उन्हीं जातीय लड़ाइयों में जिनके कारण यह देश हजारों साल गुलाम रहा!

किसी हिंसा लड़ाई या सामाजिक स्तर पर यदि किसी कारण एक कमजोर या पिछड़े वर्ग में किसी की जान चली जाति है तो मीडिया, तथाकथित बुद्धिजीवियों और राजनेताओं द्वारा इसे एक नया रूप दिया है कि जैसे पीड़ित पूरा कथित छोटा वर्ग हो और शोषित कथित ऊँचा वर्ग। इस कारण फैला यह जहर आज जातीय नफरत का बड़ा कुंड बन चुका है। शायद सहारनपुर हिंसा इस तरह के प्रचार का ही नतीजा है। महाराणा प्रताप और अम्बेडकर में कौन बड़ा कौन छोटा विवाद आखिरकार इस हिंसा का कारण बन गया। जबकि महाराणा प्रताप और अम्बेडकर दोनों ही इस देश के सच्चे सपूत थे एक ने देश को स्वाभिमान दिया तो दूसरे ने देश को संविधान तो फिर फालतू की रार क्यों? जागरूकता के आन्दोलन होने चाहिए स्वतंत्र समाज हर किसी को इसकी आजादी देता है बशर्ते आंदोलन का उद्देश्य हिंसक न हो, एक ऐसे समाज की स्थापना हो जिसमें सामाजिक-आर्थिक विषमता न हो, जो ऊँच-नीच की अवधारणा से रहित हो और जो सामाजिक समानता पर आधारित हो। सामाजिक शोषण, उत्पीडन मुक्त समाज की अब दरकार है पर समाज के लोगों के सामने यह प्रश्न बार-बार उठता है कि आखिर इस मुक्ति का आंदोलन के नेतृत्व कौन करेगा। प्रश्न इतना ही नहीं है कि नेतृत्व कौन करेगा? बल्कि प्रश्न सच्चे नेतृत्व का भी है? -राजीव चौधरी

बोध कथा

आत्मा को खोजो भाई!

बारह यात्री थे। वे एक नगर से दूसरे नगर को जा रहे थे। आगे बढ़े तो एक नदी आ गई। अब सब लोग घबराये कि नदी को कैसे पार करें? कोई पुल नहीं, नाव नहीं। पार जाना आवश्यक है, कैसे जायें?

इनमें एक स्याना था। उसने कहा- ''देखो, घबराओ नहीं, नदी को अवश्य पार करना है। सब लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़ लो। हम सब मिलकर पार हो जायेंगे।''

सबने ऐसा ही किया। दृढ़ता से हाथ पकड़ लिये। प्रयत्न करके पार हो गये। किनारे पर पहुंचे तो स्याने व्यक्ति ने कहा-''अब गिनती कर लो कि कहीं कोई नदी में तो नहीं रह गया?''

दूसरे ने कहा-''सबसे अधिक बुद्धिमान् तू ही है, तू ही गिन।''

उसने गिनना आरम्भ किया-'' एक, दो, तीन, चार, पांच, छ:, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह।'' स्वयं को उसने गिना ही नहीं। चौंककर बोला-'ये तो ग्यारह हैं, एक व्यक्ति कहां गया?''

दूसरे ने कहा-''ठहरो, मैं गिनता हूं।'' उसने भी अपने-आपको छोड़ दिया। कहा-''ये तो ग्यारह हैं।'' तब तीसरे ने गिना। उसने भी अपने-आपको नहीं, शेष ग्यारह को ही गिना। चौथे ने गिना, पांचवें ने गिना। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों ने गिना। किसी ने भी अपने-आपको नहीं गिना। सबने ग्यारह ही गिने ओर लगे रोने कि एक व्यक्ति डूब गया। वे इस प्रकार रो रहे थे कि एक और यात्री उधर से निकला-उसने पूछा-''क्या हुआ भाई! तुम रोते क्यों हो।''

उन्होंने कहा-''हम बारह थे। नदी को पार करते हुए एक व्यक्ति डूब गया। अब ग्यारह शेष रह गये हैं, इसलिए रोते हैं।'' उस व्यक्ति ने एक दृष्टि में उन्हें देखा कि ये तो बारह है। तब बोला- ''देखो! यदि मैं तुम्हारे बारहवें साथी को खोज दूं, तो?''

वे बोले-''तब तो हम तुम्हें भगवान् मान लेंगे।'' उसने कहा-''बहुत अच्छा। सब बैठ जाओ। मैं प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर चपत मारूंगा। जिसे पहली चपत लगे, वह कहे एक, जिसे दूसरी लगे, वह कहे दो। इस प्रकार सब बोलते जाओ।''

वे सब बैठ गये। उस यात्री ने पहले व्यक्ति के मुख पर चपत मारकर कहा- ''एक।'' पहले ने कहा -''हां एक।'' तब उसने दूसरे के मुंह पर चपत मारकर कहा-''दो।'' दूसरे ने कहा-''हां, दो।'' इसी प्रकार उसने तीन, चार, पांच, छ:, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह-सब गिन डाले। अन्तिम यात्री ने कहा-''हां, बारह।'' और सब प्रसन्न हो गये कि उनका बारहवां साथी मिल गया। सबने चपत मारने वाले को कहा-''तू तो वस्तुत: भगवान् है।''

आपको इन यात्रियों की मूर्खता पर हंसी आती है, परन्तु सोचकर देखो, हम स्वयं क्या कर रहे हैं? हम बारह यात्री चले थे जीवन की इस यात्रा पर-पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां, ग्यारहवां मन और बारहवां आत्मा। हमने आत्मा को भुला दिया। ग्यारह-ही-ग्यारह दिखाई देते हैं। बारहवां दृष्टिगोचर नहीं होता। इन ग्यारह क लिए हम सब-कुछ करते हैं। प्रात: से सायं तक, सायं से प्रात:काल तक परिश्रम करते हैं। आत्मा के लिए कुछ भी नहीं करते। इन ग्यारह को हम प्रत्येक प्रकार का भोजन देते हैं। आत्मा को हमने भूखा बैठा रक्खा है। आज आत्मा ही डूब गया है। अत: मनुष्य दु:खी है, अशान्त है, कहीं भी उसे शान्ति नहीं मिलती।

-: साभार :-
बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

87वीं पुण्यतिथि (31 मई) पर विशेष

क्रान्तिकारी चेष्टा के आद्य प्रवर्त्तक तथा संस्कृत के अप्रतिम विद्वान पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

....1881 में उन्हें प्राच्य विद्याओं के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए बर्लिन जाना पड़ा। वहां उन्होंने संस्कृत को भारत की एक जीवित भाषा सिद्ध करते हुए अपना प्रसिद्ध शोधपत्र पढ़ा। स्वामी दयानन्द जी का श्यामजी से उनके इंग्लैण्ड-प्रवास की अवधि में संस्कृत माध्यम से विस्तृत प्रत्र-व्यवहार होता रहा। इसमें स्वामी जी ने इंग्लैण्ड निवासियों की भारत के प्रति धारणा तथा ब्रिटिश संसद् के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी भेजने के लिए कहा। इस प्रत्राचार से स्वामी दयानन्द की राजनैतिक दूरदर्शिता प्रकट होती है।.....

स्वामी दयानन्द जी के चहेते शिष्य, क्रांतिकारी चेष्टा के आद्य प्रवर्तक तथा संस्कृत के अप्रतिम विद्वान् पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म गुजरात के कच्छ प्रान्त के माण्डवी नामक नगर में, करसनजी भंशाली नामक एक साधारण स्थिति के वैश्य परिवार में हुआ। वे 1857 के वर्ष में जन्में थे।

यह वही वर्ष था, जब भारत ने अपनी खोई हुई स्वाधीनता को प्राप्त करने के लिए प्रथम बार सशस्त्र संग्राम करने की चेष्टा की थी। श्याम जी का प्रारम्भिक अध्ययन कच्छ की राजधानी भुज में हुआ। तत्पश्चात् वे अपने पिता के पास बम्बई चले गए और 'विल्सन हाई स्कूल' में प्रवेश लिया। उन्होंने संस्कृत का अध्ययन करने के लिए पं. विश्वनाथ शास्त्री की पाठशाला में अपने अभ्यास को जारी रखा। परिश्रम तथा अध्यवसाय से संस्कृत- व्याकरण तथा साहित्य में प्रवीणता प्राप्त की।

यह एक सुखद संयोग रहा कि श्याम जी की प्रतिभा तथा अध्ययन-क्षमता को बम्बई के एक धनाढ्य सेठ छबीलदास लल्लूभाई ने पहचाना। उन्होंने अपनी लड़की भानुमति को 1875 में उनसे ब्याह दिया। इसी वर्ष में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द का बम्बई में आगमन हुआ। वहीं युवक श्यामजी भी स्वामी जी के सम्पर्क में आए। स्वामी दयानन्द ने उनकी योग्यता तथा क्षमता को पहचाना। उन्होंने श्यामजी को संस्कृत का प्रगाढ़ अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

बम्बई में ही श्याम जी की भेंट ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर पद पर पीठासीन प्रो. मोनियर विलियम्स से हुई। उन्होंने इस होनहार युवक को इंग्लैण्ड आकर उच्चतर अध्ययन करने के लिए प्रेरित यिका।

इधर स्वामी दयानन्द 1877 में ही वेदभाष्य लेखन का महत् कार्य आरम्भ कर चुके थे। वेदभाष्य का मुद्रण बम्बई के प्रसिद्ध 'निर्णय सागर यंत्रालय' में होता था। वहीं से इसे ग्राहकों को भेजा जाता था। अपने गुरु स्वामी दयानन्द जी के आदेश से श्यामजी कुछ काल तक वेदभाष्य के प्रकाशन तथा वितरण का कार्य संभालते रहे।

1879 में वे इंग्लैण्ड गए और मोनियर विलियम्स के सहयोगी प्रोफेसर के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयमें संस्कृत पढ़ाने लगे। उन्होंने स्वयं बैरिस्टरी का अध्ययन किया। इस परीक्षा को उत्तीर्ण कर बार-एट-लॉ हो गए।

1881 में उन्हें प्राच्य विद्याओं के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए बर्लिन जाना पड़ा। वहां उन्होंने संस्कृत को भारत की एक जीवित भाषा सिद्ध करते हुए अपना प्रसिद्ध शोधपत्र पढ़ा। स्वामी दयानन्द जी का श्यामजी से उनके इंग्लैण्ड-प्रवास की अवधि में संस्कृत माध्यम से विस्तृत प्रत्र-व्यवहार होता रहा। इसमें स्वामी जी ने इंग्लैण्ड निवासियों की भारत के प्रति धारणा तथा ब्रिटिश संसद् के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी भेजने के लिए कहा। इस प्रत्राचार से स्वामी दयानन्द की राजनैतिक दूरदर्शिता प्रकट होती है।

1885 में श्याम जी एक प्रतिभा सम्पन्न न्यायविद् बैरिस्टर के रूप में भारत आए। उन्होंने बम्बई होईकोर्ट में वकालत भी आरम्भ की किन्तु अनेक देशी राज्य उनकी प्रतिभा तथा योग्यता का लाभ उठाना चाहते थे। फलतः श्याम जी ने रतलाम, उदयपुर तथा जूनागढ़ में कुछ वर्षों तक, इनके शासकों के मंत्रिमण्डल में रहकर कार्य किया। किन्तु स्वभाव से ही स्वतंत्रताप्रिय, स्वाभिमानी तथा अस्मिता के धनी श्यामजी को अंग्रेजों के दास-तुल्य इन देशी राजाओं की सेवा अनकूल तथा रुचिकर प्रतीत नहीं हुई।

1897 में वे अपनी मातृभूमि से विदा लेकर इंग्लैण्ड चले गए। इंग्लैण्ड की यह यात्रा एक महत् उद्देश्य की सिद्धि के लिए की गई थी। यहां रहकर वे स्वतंत्र रूप से भारत की राजनीति के नित्य बदलने वाले स्वरूपों के ''सावधान दर्शक'' बने। समय-समय पर भारत के अपने राजनीतिज्ञ मित्रों को वे परामर्श भेजते रहे। उन्होंने इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध दार्शनिक हर्बर्ट स्पैन्सर तथा अपने धर्मगुरु स्वामी दयानन्द जी के नाम से दो छात्रवृत्तियां जारी कीं। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 'हर्बट स्पैन्सर स्मारक व्याख्यानमाला' चलाई।

1905 में भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर देशवासियों को भयंकर आघात पहुंचाया। परिणाम स्वरूप देश के राजनैतिक वातावरण में उग्रता आई। श्याम जी ने इंग्लैण्ड में रहते हुए 'इण्डियन होमरूल सोसाइटी' की स्थापना की तथा भारत की स्वाधीनता को इस संस्था का लक्ष्य निर्धारित किया। उन्होंने अपने विचारों को मूर्त रूप देने के लिए 'इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट' नामक पत्र निकाला। इसमें उनके क्रांतिकारी विचार निरन्तर छपते रहे।

उन दिनों भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस में नरम दल तथा गरम दल के रूप मे राजनीतिज्ञों का दो खेमों में विभाजन हो चुका था। श्याम जी की सहानुभूति स्वभावतः गरम दल के प्रति थी। वे दादाभाई नौरोजी और गोपालकृष्ण गोखले की अपेक्षा लोकमान्य तिलक की विचारधारा के अधिक निकट थे। इन दोनों में पत्राचार के द्वारा विचारों का आदान-प्रदान भी होता रहता था।

इंग्लैण्ड में रहते समय भारत के अनेक युवा क्रांतिकारी तथा स्वाधीनता के यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए सदा तत्पर रहने वाले नौजवान उनके सम्पर्क में आ चुके थे। श्याम जी उनके प्रेरणा-स्रोत ही नहीं, मित्र, दार्शनिक तथा मार्गदर्शक भी थे। लंदन में श्याम जी ने भारतीय विद्यार्थियों के निवास तथा उनमें स्वाधीनता के विचार भरने की दृष्टि से जिस 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की थी, अब उसके संचालन का भार प्रसिद्ध क्रांतिकारी और देशभक्त विनायक दामोदर सावरकर ने ले लिया था, जो उन दिनों कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैण्ड आए हुए थे। अब तक सावरकर की ही भांति लाला हरदयाल, चम्पक रमण पिल्लई, मैडम भिकाईजी कामा, सरदारसिंह राणा आदि अनेक देशभक्त, श्याम जी के अनुयायी बन चुके थे।

1907 में भारत की आज़ादी की पहली लड़ाई (1857) की स्वर्ण-जयन्ती मनाई गई। लाला लाजपतराय के निर्वासन पर इंग्लैण्ड में रहने वाले पं. श्याम जी ने एक लेख में सरकार की इस दुष्टतापूर्ण कार्यवाही की भरपूर निन्दा की। इंग्लैण्ड में रहकर भारत को स्वतंत्र कराने के लिए की जाने वाली गतिविधियों का संचालन करना श्यामजी के लिए निरन्तर कठिन होता जा रहा था, अतः फ्रांस की राजधानी पेरिस आ गए।

महायुद्ध के दौरान जब फ्रांस की सरकार को भी श्याम जी का पेरिस में रहना रास नहीं आया तो स्विट्ज़रलैण्ड के जेनेवा नगर में रहने लगे। जब लोकमान्य तिलक को कारागार से मुक्त किया गया तो श्याम जी के हर्ष का पारावार नहीं रहा। उन्होंने 'तिलक स्मारक योजना' बनाई। तिलक-व्याख्यानमाला आरम्भ करने के लिए दस हजार रुपये प्रदान किये।

भारत की राजनीति में महात्मा गांधी के प्रवेश के साथ-साथ राजनैतिक आन्दोलनों के स्वरूप तथा कार्यक्रमों में भी परिवर्तन आने लगा था। गांधीजी की अहिंसा के आगे क्रांतिकारी आन्दोलनों पर प्रश्नचिह्न लगने लगे। जनता भी सत्याग्रह एवं असहयोग जैसे अहिंसा-प्रधान कार्यक्रमों की ओर आकृष्ट हुई। श्याम जी भी वृद्धावस्था की सीमा में प्रवेश कर चुके थे। उनकी राजनैतिक प्रवृत्तियां कम होने लगी थीं। 1923 में उन्होंने अपने पत्र 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट' को बंद कर दिया।

1927 में जब पं. जवाहरलाल नेहरू स्विट्ज़रलैण्ड आए तो श्याम जी के दर्शनार्थ उनके निवास पर भी गए। उन्होंने उस महापुरुष को 'वृद्ध सिंह' की उपमा दी।

1930 के आरम्भ में श्याम जी के स्वास्थ्य में असाधारण गिरावट आ गई। 31 मई 1930 को अपनी पत्नी भानुमति की उपस्थिति मे इस पुरुष सिंह ने परलोक के लिए प्रस्थान यिा। उनके कोई सन्तान नहीं थी। पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा के हृदय में स्वतंत्रता की जो चिंगारी फूटी थी, उसकी पृष्टभूमि में स्वामी दयानन्द जी की उदात्त राष्ट्रभावना तथा स्वदेश-भक्ति ही कार्यरत थी। उस महापुरुष ने स्पष्ट कहा था कि भारत को स्वतत्र कराने मे हमें यदि बल-प्रयोग भी करना पड़े तो ऐसा करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए। श्याम जी ने जहां स्वामी दयानन्द जी से भारत की प्राचीन आर्य संस्कृति तथा वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा एवं आस्था के भाव ग्रहण किये, एक सच्चे गुण-ग्राहक की भांति जेम्स

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

श्री शिव कुमार मदान जी श्रम एवं रोजगार मन्त्रालय में हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य मनोनीत

भारत सकार ने श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया है जिसमें श्री शिव कुमार मदान जी को हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है। ज्ञात हो श्री शिव कुमार मदान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान एवं आर्य समाज जनकपुरी पंखा रोड दिल्ली के प्रधान पद पर रहते हुए जन सेवा में संलग्न हैं। श्री मदान जी को दिल्ली सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व पर्यावरण दिवस अनेक राज्यों सहित दिल्ली में आर्यसमाज ने किया पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का आयोजन

पूर्वी बाबरपुर, शाहदरा पार्क

औचन्दी चौक

केशवपुरम् पार्क

वीरेन्द्र नगर

द्वारका पार्क

गोविन्दपुरी पार्क

सी-3 पार्क जनकपुरी

जनकपुरी ए ब्लाक पार्क

ए.जी.सी.आर. एन्कलेव

कीर्ति नगर

विपिन गार्डन पार्क

जहांगीरपुरी पार्क

झिलमिल कालोनी पार्क

मोती नगर चौक

सुन्दर विहार पार्क

नांगल राया पार्क

न्यू लायलपुर

इन्द्रा पार्क, नजफगढ़

राधापुरी आर्यसमाज

तिलक नगर विद्यालय

राज नगर पालम कालोनी

रोहतास नगर पार्क

पंजाबी बाग (पश्चिम) विद्यालय

शादीखामपुर विद्यालय

May We Always Follow God's Teachings and Become Prosperous and Fearless in Life

Veda Prarthana

- Acharya Gyaneshwarya

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीरवत्तमम्।।

Agnina rayimashnavat
poshameva dive dive
Yashasam viravattamam.
(Rig Veda 1:1:3)

Agnind May we always follow God's our Ultimate Leader's path/ message, **rayim ashnavat** thus may we acquire wisdom and wealth, dive **dive poshameva** day after day may we progressively grow, mature and become prosperous. **Yashasam** may we acquire fame and recognition by friends and society, **viravattamam** may we become brave and fearless.

Dear God, You are Agni the Ultimate Leader and Ultimate Light who enlightens us and always guide us in the right and nirtuous direction. You are also the Master of all worldly spiritual and physical treasures. Dear God, we commit ourselves to earn our living by honest means as directed by you in the Vedas and what **rishis** (seere) have described in other related scriptures based on the Vedic teachings. We will earn, gather and enjoy our wealth and worldly goods by hard work, honest and honorable means according to the principles and directions given in these scriptures and thus grow, mature and become gradually prosperous day by day. In addition, we commit ourselves not to earn, gather or enjoy wealth and worldly goods that have been obtained y dishonest or unfair means even though such methods have become acceptable in the society due to corruption and faith in wrong teachings that are against those in the Vedas. Dear God, it is a strange and perplexing that most persons who have wealth, big houses and other luxurious amenities, despite the availability of these items are still not happy or contented, nor have peace, courage or generosity in their lives. Why is it so? By understanding and following your teachings in life one will learn and come to appreciate that it is so because such person's have not acquired their wealth by virtuous means. Any wealth that is acquired against Your or rishis' (sages or seers) teachings and the principles they have laid down in the scriptures is not virtuous. **Any wealth that is acquired by wrong means such as deceit, lies, cruelty or bribery etc, does not produce happiness, peace, contentment, natural refreshing sleep, good appetite, health, fearlessness or freedom of mind.**

O Omniscient Supreme Divine! You always inspire us ot follow the virtuous path. May we always follow Your teachings when we earn and acquire wealth and use such virtuous wealth not only for our needs but also for the progress of the community, nation and the world. May we donate and share our wealth for the needs of true saintly persons and Yoga teachers, schools which promote You, health care of the needy, orphanages, welfare of cow's (Gaushala) etc. and thus make ourselves noble as well as earn fame, respect, recognitions by friends and society.

Dear God, people who earn their wealth and utilize it according to Your teachings, have their envy, weakness, cowardliness, lazines and miserliness gradually uprooted and destroyed. Their body, mind and intellect all gradually strengthen. Their physical body becomes healthy, strong, attractive and full of luster. Their mind's will power, enthusiasm, courage, strength, fearlessness and bravery gradually increase. Their knowledge base becomes broad, intellect becomes sharp and focused, honesty and integrity increase, and finally their soul acquires peace, Joy and bliss.

Dear God, persons who follow Your teachings and make them the fabric of their life, not only make personal gains but have noble children and family. They help remove atheism, selfishness, laziness, un-civility, corruption, injustice and crime from the society they live in. Such persons with their noble attributes and deeds make their community, society and the nation better, a model for others to follow and emulate.

O Omnipresent God, this is our only prayer to You that whenever we do something in life we always follow Your teachings. We will always remember that even if nobody else is watching us You are always watching us. Dear God, You are present even inside our soul and every day, every moment guiding and inspiring us to follow truth and virtue in life. We make a solemn commitment that from now on we will follow Your teachings and not do any deeds against them. Please give us Your grace and blessings so that we may fulfill our pledge.

(For explanations of prosperity in the Vedas also see mantra # 4, 6, 17 and 21)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 25 (अ)

गतांक से आगे....

46. कुर्ता कञ्चुकः,
47. कैंची कर्तरी,
48. कोठरी लघुकक्षः,
49. गेटकीपर द्वारपालः,
50. पिअन सेवकः,
51. क्लर्क लिपिकारः, करणिकः,
52. मैदान क्षेत्रम्
53. खेल का मैदान क्रीडाक्षेत्रम्,
54. स्पोर्ट्स क्रीडा,
55. गेन्द कन्दुकः, गेन्दुकम्,
56. फुटबॉल पादकन्दुकम्
57. घण्टा होरा,
58. चपरासी लेखहारकः, प्रेष्यः,
59. चप्पल पादुका, पादुः,
60. चॉक कठिनी,
61. चांसलर कुलपतिः,
62. चारों ओर मुडने वाली कुर्सी पर्पः,
63. रंग वर्णः,
64. चिह्न अंकः,
65. चोटी शिखा, सानुः,
66. रिसिस जलपानवेला,
67. जिल्द प्रावरणम्
68. झाड़ू मार्जनी,
69. टाइम टेबल समयसारणी,
70. कैरीकुलम्म् पाठ्यक्रमः,
71. टेनिस खेल प्रक्षिप्त कन्दुक क्रीडा,
72. एजुकेशन डाइरेक्टर शिक्षा संचालकः
73. डिप्टी डाइरेक्टर शिक्षा उपशिक्षा संचालकः,
74. डेस्क लेखनपीठम्
75. ड्रॉइंग रूप उपवेशगृहम्,
76. दरी आस्तरणम्,
77. दस्ता कागज का दस्तकः,
78. निब लेखनीमुखम्
79. नेट जालम्
80. नेलकटर नखनिकृन्तनम्,
81. नेलपॉलिश नखरञ्जनम्,
82. पायजामा पादयामः,
83. पॉलिश पादुरञ्जनम्, पादुरञ्जकः
84. पेंसिल तूलिका,
85. पैण्ट आप्रपदीनम्,
86. पोर्टिको बरामदा प्रकोष्ठः,
87. प्रिंसिपल प्रधानाचार्यः, प्रधानाध्यापकः प्राचार्यः,

शिक्षा सम्बन्धी शब्द

88. प्रोफेसर प्राध्यापकः,
89. फर्श कुट्टिमम्
90. फाउण्टेन पेन धारालेखनी,
91. फाइल पत्रसञ्चयिनी,
92. फीस शुल्कः,
93. बरामदा वरण्डः,
94. बाथरूम स्नानागारः,
95. बेंच काष्ठासनम्
96. बैंड वादित्रगणः,
97. बैडमिण्टन पत्रिक्रीड़ा,
98. मेज फलकम्,
99. पढाई की मेज लेखनफलकम्,
100. यूनिफॉर्म एकपरिधानम्, एकवेषः

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग — विरोधियों की सभा में आर्यवीर की हुंकार

यह 1917 ई. की घटना है। चौधरी रामसिंहजी घण्डरां हिमाचल प्रदेश में स्वाध्याय में लीन थे। एक पौराणिक कालूराम ने सभा में पतिव्रत धर्म, स्त्री–शिक्षा तथा विधवा–विवाह पर बड़ा ऊट–पटाँग तथा आपत्तिजनक भाषण दिया। चौधरी रामसिंह उस सभा स्थल पर बैठे सब–कुछ सुनते रहे।

जब सभा समाप्त हुई तो श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द का वीर सैनिक रामसिंह वहीं खड़ा हो गया। भरी सभा में गर्जना करते हुए उन्होंने कहा परसों मैं यहीं पर इन सवालों का उत्तर दूँगा। सब सज्जन यहाँ आ जावें।

आर्यों के इसी दृढ़ धर्मभाव ने ही पाखण्ड के पाँव उखाड़े थे।

स्मरण रहे कि सनातनी कालूराम ने यह भी कहा था कि स्त्री–शिक्षा पतिव्रत धर्म के नष्ट होने का कारण है। ऐसी अनर्गल बातों को कौन आर्य सह सकता है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

_तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी_ : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीरपुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी कालोनी - जहांगीरपुरी में आर्य समाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोगी संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम बनवाकर सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक
खाता सं. 33723192049
IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामन्त्री

पृष्ठ 4 का शेष

स्टुअर्ट मिल तथा हर्बर्ट स्पैन्सर जैसे अन्य विदेशी दार्शनिकों से प्रेरणा लेने में भी उन्होंने कोई संकोच नहीं किया। उन्होंने स्पैन्सर की इस उक्ति को अपने जीवन एवं कार्यों के द्वारा चरितार्थ किया था जिसमें कहा गया है कि 'अत्याचार का विरोध करना न्यायोचित ही नहीं, अपितु आवश्यक भी है। अत्याचार को सह लेना, लोकहित के साथ-साथ स्वाभिमान का भी गला घोंट देता है।''

श्याम जी के जीवन का अधिकांश भाग विदेशों मे ही व्यतीत होने के कारण, वे अपनी मातृ संस्था आर्य समाज की सेवा के लिए अधिक समय नहीं निकाल सके। स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का सभासद् नियुक्त किया था। वे कुछ काल के लिए अजमेर भी रहे तथा वैदिक यंत्रालय का संचालन भी किया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक पं. राम नारायण मित्र से एक बार उन्होंने कहा था, ''लोगों ने स्वामी दयानन्द को पहचाना नहीं इतना बड़ा विद्वान् ऐसे सर्वतोमुखी क्रांतिकारी का फिर पैदा होना कठिन है।''

एक राजनैतिक कर्मी तथा क्रांतिकारी आन्दोलन के सिद्धान्त-स्थापक आचार्य की कठिन भूमिका निभाते हुए भी श्याम जी ने संस्कृत विद्या को कभी नहीं भुलाया। 'अष्टाध्यायी' पर उनका असाधारण अधिकार था और वे धाराप्रवाह संस्कृत-भाषण करने की क्षमता रखते थे।

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32

प्रधान - श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
मन्त्री - श्री संदीप कुमार उपाध्याय
कोषाध्यक्ष - श्री फूल चंद आर्य

आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली-110046

प्रधान - श्री सुखवीर सिंह आर्य
मन्त्री - श्री बचन सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री ब्रह्म प्रकाश आर्य

शोक समाचार

श्री सुन्दर दास कालरा दिवंगत

आर्य समाज डेरा महरोली के संस्थापक श्री सुन्दर दास कालरा का 20 मई 2017 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे दो पुत्रों श्री सुभाष कालरा व श्री विजय कालरा व तीन पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। दिनांक 3 जून 2017 को सन्त नागपाल भवन छतरपुर नई दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्तियों ने पधारकर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आचार्य ऋषिपाल शास्त्री को पत्नीशोक

आर्यसमाज नबी करीम के धर्माचार्य आचार्य ऋषिपाल शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती किरण आर्या का दिनांक 3 जून, 2017 को हृदयगति रुक जाने के कारण 45 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 14 जून को आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग में सम्पन्न की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्‌गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

दिल्ली सभा के अन्तर्गत क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दोपहर 3 से सायं 7:15 बजे तक दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को भी साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। शेष स्थान बाद में सूचित किए जाएंगे। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी।

पश्चिम दिल्ली-1 आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी रविवार : 25 जून, 2017	**पश्चिम दिल्ली-2** आर्यसमाज कीर्ति नगर रविवार : 2 जुलाई, 2017
उत्तरी दिल्ली आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स रविवार : 9 जुलाई, 2017	**पूर्वी दिल्ली** आर्यसमाज सूरजमल विहार रविवार : 16 जुलाई, 2017
	दक्षिण दिल्ली आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2 रविवार : 23 जुलाई, 2017

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन 10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

निःशुल्क सरल आध्यात्मिक

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में 30 जून से 2 जुलाई तक निःशुल्क सरल आध्यात्मिक शिविर स्वामी धर्ममुनि जी के सान्निध्य एवं स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक के निर्देशन में आयोजित होगा।

-स्वामी रामानन्द सरस्वती, संयोजक

निःशुल्क वैदिक ज्योतिष शिविर

आर्य समाज टैगोर गार्डन एवं पतंजलि योग समिति, राजौरी गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में निःशुल्क वैदिक ज्योतिष शिविर एवं योग कार्यशाला का आयोजन 28 जून से 2 जुलाई 2017 के बीच प्रातः 11 बजे से सायं 5 बजे तक किया जा रहा है। मुख्य योग शिक्षक श्रीमती उषा सढ़ाना एवं श्री राजकुमार जी होंगे।

- मधु आर्या, मन्त्राणी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 23-27 मई तक आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर प्राप्त प्रतिक्रियाएं

* यह प्रशिक्षण बहुत ही सुन्दर व्यवस्थित लागा। सीखने पर बहुत अच्छा लगा और बहुत कुछ मिला। मैं गुड़गांव में कम से कम 10 लोगों को दैनिक यज्ञ के लिए प्रेरित करूंगी।
  -ममता महतानी, सी ब्लॉक, 414-बी, सुशान्त लोक-1 गुड़गांव
* यज्ञ प्रशिक्षण में आकर यज्ञ आदि क्रिया को सीखकर बहुत प्रभावित हुए तथा इसको अपनी जीवल शैली में पूर्ण रूप से उतारने का प्रयास रहेगा तथा अपने विद्यालय में इसको सुचारु रूप से प्रचलित करेंगे।
  -निर्मला, पुष्पा तथा श्रुति शर्मा, रघुमल आर्य कन्या विद्यालय, राजा बाजार, नई दिल्ली
* दैनिक यज्ञ की संक्षिप्त एवं सही विधि, एकरूपता समझी, जो मैंने सीखा वह आगे अन्यों को सिखाऊंगा यज्ञों वै श्रेष्ठतम् कर्म।
  -धर्मवीर आर्य, फ्लैट-196, रोजवुड अपार्टमेंट से.-13 द्वारका
* अति उत्तम एवं सराहनीय कार्य है एवं बहुत ही अच्छा अनुभव रहा। अब मैं यज्ञ सिखाने की इच्छुक हूं।
  - निकेता आर्या, महावीर एन्क्लेव, नई दिल्ली
* Amazing experience, it should be taught in schools also specially the pronunciation of (K) Aksar Yagya/Yajya (Yajya is right). I am very thankful for this workshop.
  -Asha Rani Bharat, H.No. 84A, Kirari Vilage, N.Delhi

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 जून, 2017 से रविवार 11 जून, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 8/9 जून, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 जून, 2017

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 9 जुलाई, 2017

हम सब मिलकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हैं। इसी निमित्त हम अनेक कार्यों का सम्पादन अपने–अपने आर्य समाजों के माध्यम से निरन्तर कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति की नहीं परिवार की विचारधारा है। जब तक आर्यसमाज परिवार के साथ नहीं जुड़ेगा तब तक हम सशक्त नहीं हो सकते। इसी क्रम में आवश्यक प्रतीत हुआ कि हमें अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। आर्य परिवारों के सामने एक ऐसे मंच का अभाव सा है जहां वे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अच्छे वर–वधू का चयन कर सकें। जाति के आधार पर बने अनेक संगठन तो इस कार्य को कर रहे हैं किन्तु वैदिक विचारधारा वाले महानुभाव जिनमे कोई भी जाति का आधार न हो, उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। इस हेतु सभा ने गत 7 वर्ष पूर्व आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के कार्य को आरम्भ किया था। तब से इसकी उपयोगिता के चलते ये निरन्तर चलता चला आ रहा है। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** रविवार दिनांक **9 जुलाई 2017** को प्रात: 10 बजे से **आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी, नई दिल्ली–110018** में आयोजित किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र–पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/– रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न करके भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिस बैंक** खाता संख्या 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें।

आर्यजनों/पाठकों एवं आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों/सदस्यों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बार–बार इसकी सूचना देवें तथा प्रकाशित फार्म की प्रतियां करके आर्यसमाज में रखवा लेवें, मांगने पर अपने सदस्य को दें और नोटिस बोर्ड पर लगाकर, सदस्यों को यह भी निवेदन करें कि वे अपने सम्पर्क के परिवारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। सम्पर्क करें–

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 9414187428)

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली मो. 9540040324)

प्रतिष्ठा में,

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का वार्षिकोत्सव

आधुनिक भारत – ले चलें शिखर की ओर

22 जुलाई, 2017 – प्रात:10 से 2 बजे

तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय विद्यार्थियों के परिवारों सहित अवश्य पहुंचे

– सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता

सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा : हम सब का दायित्व

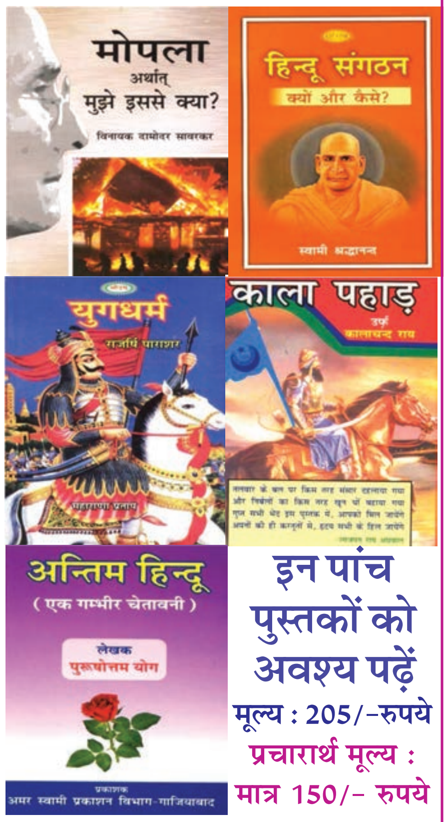

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

मूल्य : 205/–रुपये

प्रचारार्थ मूल्य : मात्र 150/– रुपये

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह